गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु अधिगम वातावरण

विद्यालय के वातावरण के निर्माण में मुख्य रुप से, नेतृत्व का व्यवहार, अध्यापकों की नैतिकता, विश्वास का स्तर, संस्कृति, अभिभावकों का सहयोग, समुदाय का सहयोग, अध्यापक की प्रभाविकता, कार्य निष्ठा, सन्तुष्टि तथा छात्रों की शैक्षिक उपलब्धता मूल्यांकन आदि कारक प्रभावी होते हैं। यदि यह सब अच्छी प्रकार से कार्य करते हैं तो या उच्च स्तर के हैं तो विद्यालय का वातावरण अच्छा होगा अन्यथा नहीं। अतः विद्यालय वातावरण भी वास्तव में विद्यालय के पर्यावरण तथा प्रधानाध्यापक, अध्यापक, छात्रों, कर्मचारियों, अभिभावकों, समुदाय आदि के आपस में अन्तः क्रिया व सम्प्रेषण के परिणाम स्वरुप उत्पन्न होता है।

विद्यालय वातावरण के प्रकार (Types of School Environment)

विद्यालय में प्रधानाध्यपक / प्रबन्धन तथा अध्यापकों, कर्मचारियों, छात्रों आदि में अन्तः क्रिया, सम्प्रेषण व कार्य करने की शैली के आधार पर हॉपिन तथा क्राफ्ट (Hoipin and Craft) ने छः भागों में विद्यालयी वातावरण को बाँटा है। ये छः प्रकार निम्न हैं:—

1. खुला वातावरण (Open Environment) ⇒

इस प्रकार के वातावरण में विद्यालय में खुलापन अधिक होता है। अध्यापक के किसी भी कार्य में प्रधानाध्यपक या प्रबन्धन द्वारा कोई बाधा नहीं डाली जाती है। आपस में सभी एक-दूसरे से प्रेम व मित्रवत व्यवहार करते हैं। अध्यापकों पर कार्य का अत्यधिक भार नहीं होता तथा वे खुशी-खुशी विद्यालय के कार्यों को करते हैं तथा किसी व्यक्ति से ये कहते हुए सुने जा सकते हैं कि विद्यालय या संस्था से जुड़ने पर वे गर्वित हैं।

2. बन्द वातावरण (Closed Environment) ⇒

यह सबसे अत्यावहारिक होता है। प्रधानाध्यापक या प्रबन्धन सर्वोपरि होता है वह अपने अधीनस्तों को पूर्ण नियन्त्रण में रखता है। प्रधानाध्यापक या प्रबन्धन अध्यापकों के प्रत्येक कार्य व गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करता है तथा आवश्यकता पड़ने पर उनको दबाने में अपना योगदान देते हैं। वह कभी साथी अध्यापकों की राय नहीं लेता, उनकी भलाई नहीं चाहता तथा विद्यालय की कठोर नीतियाँ बनाकर उनका पालन करने को कहता है। ऐसे में अध्यापक स्वेच्छा से कार्य नहीं करते वे मात्र औपचारिकता पूरी करते हुए कार्य करते हैं तथा कभी भी अवसर मिलने-पर वे प्रधानाध्यापक या प्रबन्धन के विरुद्ध हो जाते हैं।

Scanned with CamScanner

3. नियन्त्रित वातावरण (Controlled Environment)

इसमे अध्यापक अत्यन्त कठोर नियन्त्रण में कार्य करते हैं तथा कठोरता-पूर्वक विद्यालय नीतियों का पालन करते हैं। प्रधानाध्यापक बहुत कम मानवीय गुण रखता है तथा बहुत ही कम प्रेम, सद्भाव रखता है, सदैव बॉस होने का एहसास कराता है। प्रधानाध्यापक अहम् केन्द्रित होता है, अवैयक्तिक औपचारिकता वाला होता है।

4. स्वायत्त वातावरण (Autonomous Environment)

इस प्रकार के वातावरण में खुले वातावरण (Open Environment) से कम खुलापन होता है तथा प्रधानाध्यापक उन्हे आपस में अन्तः क्रिया करने के लिए पूर्ण स्वतन्त्रता देते हैं जिससे अध्यापक अपनी सामाजिक आवश्यकता की पूर्ति करता है। अध्यापक अपना कार्य अकेले व साथ दोनों प्रकार से करता है तथा आसानी से अतिशीघ्र अपने उद्देश्यों को प्राप्त करता है तथा संस्था के कार्यों को पूर्ण करता है।

5. पैत्रक वातावरण (Paternal Environment) ⇒

यह आंशिक रूप से बंद वातावरण के समान है प्रधानाध्यापक प्रत्येक अध्यापक के बारे मे प्रत्येक बात को जानना चाहता है तथा उसे अपनी राय देता है। प्रधानाध्यापक प्रत्येक स्थान पर अध्यापकों को परखता है सलाह देता है कि कैसे कार्य किया जाना चाहिए। प्रधानाध्यापक का मुख्य केन्द्र विद्यालय होता है तथा उसकी गतिविधियों को ही वह क्रियान्वित करता है। अध्यापकों का आपस में मतभेद रहता है।

6. जाना पहचाना / पारिवारिक वातावरण (Familiar Environment)

वास्तव में इस प्रकार के वातावरण में विद्यालय में मित्रतापूर्ण वातावरण रहता है। इसमे सभी कार्य मिलजुल कर किये जाते हैं। अध्यापकों को अच्छे कार्य के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है, जिससे उनमे आत्म-विश्वास की कमी नही होती। सामाजिक रूप से यह कहा जा सकता है कि अध्यापक एक बड़े सुखी परिवार (संयुक्त परिवार) का भाग होते हैं। प्रधानाध्यापक सदैव अध्यापकों की भलाई के लिए कार्य करता है।

उपर्युक्त वातावरण के प्रभावों को देखने पर यह ज्ञात होता है कि जैसा वातावरण विद्यालय का होगा, प्राप्त ज्ञान का स्तर भी उसी प्रकार का होगा।

Scanned with CamScanner